Review of Literature

ISSN: 2347-2723 Impact Factor : 2.0260(UIF) Volume - 4 | Issue - 5 | December - 2016

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल जी के नाटकों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण

प्रा.डॉ. गिरी डी.व्ही.
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मंठा

प्रस्तावना:

स्वातंत्र्योत्तर नाटय साहित्य के कई नाटकार है। उन नाटककारो में डॉ. लक्ष्मीनारायन लाल जी एक प्रमुख नाटककार है। जिन्होंने अपने विविध नाटकों के माध्यंम से सामाजिक समस्याओं का चित्रन करने का प्रयास किया है। नाटक साहित्य मे उनका बहुत बडा स्थान माना जाता है। मनुष्य जीवन की सार्थकता की खोज वह अपने नाटकों के माध्यंम से कर रहे है। इसी कारण इन्होंने नैतिक मूल्यों पर प्रश्नचिन्ह उपस्थित किया है। ज्यादातर नाटको में उन्होने सामाजिक समानता लाने का प्रयत्न भी किया है। स्वातंत्र्योतर सामाजिक विषमता, पूँजीपतीयों और भ्रष्ट नेताओ व्दारा हो रही सर्वसामान्य आदमी की लूट, बढता हुआ भ्रष्टाचार इन समस्याओ को अपने नाटको के व्दारा जनता के सामने लाने का प्रयास किया है। उनके नाटको की संख्या लगभग एक दर्जन से अधिक होगी। इनमें प्रमुख तौर पर मादा कैक्टस, दर्पन ओर अब्दुल्ला दीवाना विशेंष रूप से उल्लैखनीय नाटक है। इनके कई नाटक प्रकाशित हुए है। अंधा कुआँ, मादा कैक्टस, तीन आँखो वाली मछली, रक्तकमल, करफर्यू आदि इनके प्रसिध्द नाटक है। इन्होने शिल्पगत प्रयोग भी किये है। सुदंर रस; तोता मैना; सूखा सरोवर; दर्पन इनमे प्रतिकात्मक नाटक है। इनमे अधिकतर नाटको का सम्बन्ध मध्यमवर्गीय समस्याओं से है। प्रतिकात्मक नाटको मे आधुनिक भाव बोध और मानविय स्थिति को शब्द बध्द करना चाहते है।

डॉ. लक्ष्मीनारायण जी ने अपने नाटको द्वारा स्वाधीनता के बाद

हिन्दी रंगमंच को नयी दिशा प्रदान की है। उनका हर नाटक नयी शिल्प शैली का नया आविष्कार है। उनके नाटको की सबसे बडी विशेंषता यह है, की उन्हौंने नाटक को कथ्य और शिल्प के धरातल पर लोकधर्मी तथा जमीन से जोडने का सफल प्रयास किया है। पाश्चात्य रंगशैली और शिल्प के नये प्रयोग डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल जी के नाटको मे दिखाई देते है। 'अब्दुल्ला दीवाना' और 'काफी हाऊस मे इंतजार' मे एब्सर्ड नाटय–शैली का प्रभाव है। करफर्यू मे एडवर्ड आल्बी के नाटक 'हू इज आफरेड ऑफ वर्जीनिया वूल्फ? की छाया दिखाई देती है। 'एक सत्य हरिश्चन्द्र' मे लोक नाटय शैली का प्रभाव है। मादा कैक्टस, कलंकी, कर्फ्यू, अब्दुल्ला दीवाना, 'यक्ष प्रश्न' एक सत्य हरिश्चंद्र व्यक्तिगत आदि नाटकों के द्वारा इन्होंमे हिंदी के आधुनिक नाटय साहित्य को सम्पन्न किया है । 'अब्दुल्ला दिवाना' लक्ष्य है स्वातंत्र्योत्तर भारत मे उपजी चरीत्रहीनता, भ्रष्टाचार एवं नूतन अंध धार्मिकता पर तीखा प्रहार करना।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल जीने अपने 'व्यक्तीगत' नाटक द्वारा समकालीन मनुष्य द्वारा आगे बढने की प्रतिस्पर्धा तथा बदलते जीवन मूल्यों का चित्रण किया है। अर्थप्राप्ती की दौड में शामिल हो कर मनुष्य ने अपना विवेक खो दिया है। भावनाओं से उसका रिश्ता तूट गया है। ''हाशिया लो –– लूट लो –– मार दो––'' आज का युग सत्य बन गया है। समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये व्यक्तिगत का 'मै' जज की पुत्री से विवाह करता है। 'वह' 'मै' की पत्नि है, जो उसकी अमानुषिकता का शिकार है। 'वह' से 'मै' को अत्याधिक अपेक्षाऍ है.... मेरे लिए एक ही मै अनेक हो.... मेरी प्रिया, मेरी सुंदरी साथी, मेरी इंटेलेक्यूअल, मेरी धर्मपत्नी खिलाडी।'' इस सब मे 'वह' का पत्नि रुप खो जाता है और दोनो एक दूसरे से अपरिचित होते जाते है, जो व्यक्ति एक ही स्त्री में स्त्री के सारे रुप पा रहा था, उसमें बहुपत्निवादी संस्कार पनपने लगते है... सिर्फ एक ही स्त्री से जिंदगी नही कट सकती... क्योंकी मनुष्य प्रकृति से को पोली गेंमस है... बहुस्त्रीवादी।'' 'रक्तकमल' इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने सामाजिक विषमता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। बहुत कम लोग समाज मे ऐसे है जिनके पास संपत्ती ज्यादा है और जनसामान्य लोग जो संख्या मे ज्यादा है उनके पास संपत्ती नही है। जिनके पास है, वह जनसामान्य जनता का शोषण कर रहे है। उनके उपर अन्याय, अत्याचार कर रहे है। जो पिडित है। परेशान है, वह उनके जुल्मो का शिकार हो रहे है। इनकी तादात लगभग 90: प्रतिशत है लेकिन वह उनका मुकाबला नही कर रहे है। इन लोगो को अपने अधिकारो के प्रति जागृत करना ही इस नाटक का मुख्य पात्र कमल अपना कर्तव्य समझता है। वह इन शोषितों को जगाना चाहता है। इन शोषित लोगा को संगठित करके उन्हे शोषकों के विरुध्द लडने की प्रेरणा देने की आवश्यकता है और यह कार्य क्रांतिकारक युवक ही कर सकते है। ऐसी नाटककार की धारणा है। अपनी इसी उद्येश कों सफल बनाने के लिए उन्होंने कमल को प्रधान पात्र बनाया है।

शोषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला महाविरदास राजनेता इंद्रजीत और गुण्डे गुरूराम को साथ मे लेकर श्रीदास इण्डस्ट्री के गरीब मजदूरो का शोषण करता है। उसने मंगलबरेंण गरीब शुद्र की गुण्डे गुरूराम द्वारा हत्या करके उसकी जमीन छीनकर उस जगह पर महल बनाया है। वह मंगलबरेण के पुत्र कनु और पुत्री अमृता को भी डराता धमकाता है। कमल सामाजिक विषमता के विरूध्द की लढाई अपने ही घर से शुरू करता है और उन्हे उनकी जमीन के लिए स्वयं के भाई महावीरदास के विरूध्द लडने को प्रेरित करता है। अमृता हर मंगलवार को पिता की स्मृति मे दिया जलाने आती है।

महावीरदास के धमकाने पर उसे प्रत्युत्तर देती है। उसका भाई कनु भी महावीरदास की और गुरूराम की धमकियों से अब डरता नही। इस तरह कमल जनक्रांति के कार्य का प्रारंभ अपने ही घर से करता है।

इस नाटक मे कमल, महावीरदास, डाक्टर देसाई, गुरूराम, पप्पू (अगस्त) मॉ, अमृता, कनु, बिल्लु सिंह, इंद्रजीत, सारंग, ब्राम्हण, क्षत्रिय वैश्य और दरबान आदि तेरह पुरूष पात्र और दो नारी पात्र कुल पन्द्रह पात्र है। नाटककार ने इस नाटक को 'रक्तकमल' यह शिर्षक दिया है।जो प्रतीकात्मक है। रक्तकमल यह शब्द 'रक्त' और 'कमल' दो शब्दो के योग से बना है। रक्त का रंग लाल है, कमल का रंग भी लाल होता है और लाल रंग क्रांती का प्रतीक होता है। नाटक के प्रधान पुरूष पात्र का नाम 'कमल' है और उसके विचार क्रांति के है। सामाजिक विषमता नष्ट करने हेतू कमल भारत के देहातों मे बस्तियो में और गली–मुहोल्लो मे घूमकर वहॉ के गरीब लोगो को जागृत करता है, उनके दुःख–दर्द बॉटता है, उन्हे संगठित करके उनमे क्रांति की भावना उत्पन्न करता है।

कलंकी इस नाटक मे यथा स्थिति बनायी रखने के लिए जनता को गुमराह करनेवाले सत्ताधिशों के साथ संघर्ष करनेवाले उसी के लिए बलिदान देनेवाले युवक की कथा है। यह एक महत्वपूर्ण नाटक है। हेरूप इसका प्रधान पात्र है। पूरा नाटक उसके इर्द गिर्द घूमता है। अवतारवाद पर भरोसा रखने की प्रवृत्ति लोगो में बढने से निकम्मापन आया है। लोगो की यह धारणा की, परमात्मा अवतार लेकर हमारी सभी समस्याओं को मिटायेगा। और हमे सुख की प्राप्ती होगी। और इसी कारण वह अपनी खुद की शक्ती को भूल जाते है। लेकीन इस हेरूप यह पात्र लोगो को यह बात समझाता है, पर उसके पिता ही इस बात को मानते नही और खुद ही इसका समर्थन करके लोगो को बहकाते है। हेरूप के पिता अकुलक्षेम ने पूर के लोगो को प्रश्नहीन एवं आस्तित्वहीन बना दिया था। जो व्यक्ति प्रस्थापित राज्यव्यवस्था के संदर्भ में प्रश्न पूछता था, उसे मृत्युदण्ड दिया जाता था। बाद मे हेरूप उनके इस बर्ताव के विराध में खडा होता है। तो उसे जेल में डाल दिया जाता। वहॉ से वह भाग कर आता है। बाद में उसे विविध लालच दिखाये जाते है। लेकिन वह कुछ भी स्विकार नही करता तब उसे मृत्युदण्ड दिया जाता है। हेरूप मर जाता है, परंतु उसके विचार नगरवासियों मे चैतन्य जागृत करते है। जनता अवधूत का पर्दापाश करके उसे नगर से भगा देती है। और अकुलक्षेम से जनता की मुक्ती हो जाती है।

'रातरानी' यह शीर्षक प्रतिकात्मक है। इसके दो अर्थ है, एक अर्थ है। रातरानी का फूल रातरानी का एक पौधा होता है, और उसके छोटे–छोटे फूल आते है, जो अपने इर्द–गिर्द के परिवेंश को सुगंधित कर देते है। दूसरा अर्थ रात की रानी पत्नी पति के लिए रात की रानी होती है, जो अपने प्रेम की महक से पति को आनंदित करती है। जिस तरह रात रानी अपनी महक से सारे वायुमण्डल को सुवसित कर देती है, उसी तरह नारी भी अपने मानवीय कोमल भावनाओं और गुणों से पुरूष के –हदय को सुवासित करती है। यह एक पारिवारीक एवं सामाजिक समस्या प्रधान नाटक है। जयदेव इस नाटक का पुरूष पात्र और कुंतल प्रधान नारी पात्र है। पती–पत्नि के जीवन में पैदा होने वाले तनाव और संघर्ष को इस नाटक में चित्रीत किया गया है। जुआ खेलने के शराब पिने और डान्स के घरो में नाच–गाणे के भौतिक आकर्षनों में मशगुल रहने वाले जयदेव को कुंतल के प्रेम की एवं उसके आदर्शवादी गुणों की महक जल्द नही आती, देर से आती है। लेकिन जब उसका पति सही रास्ते पर आता है। तब दोनो तनाव से मुक्त होकर एक हो जाते है, अनंदित हो जाते है। 'मादा कैक्टस' इस नाटक मे कुल छः पात्र है। अरविंद, मीनाक्षी, सुजाता, सुधीर, ददा और गंगाराम इस नाटक में मनुष्य की अहम वृत्ती, नारी को कम समझने की प्रवृत्ति को या वह कही कामों मे बाधा बन सकती है, इसलिए उनसे जरा दूर रहना चाहीए। इन बातो को या स्त्री के व्यक्तित्व को दबाने की पुरूष की प्रवृत्ति के कारण स्त्री–पुरूष सम्बन्धो में उत्पन्न होने वाली समस्या के संदर्भ में लिखा गया यह नाटक है।

नाटक का यह शीर्षक उपरोधात्मक अर्थ का है। कैक्टस अंग्रेजी भाषा का शब्द है और वह एक पौधे का नाम है। इस पौधे में नर और मादा दो प्रकार होते है। वनस्पती शास्त्र के अनुसार मादा कैक्टस के संपर्क मे नर कैक्टस आता है। तो मादा नर कैक्टस को सोख लेती है। और इससे नर कैक्टस सूखकर जीवन–विहिन हो जाता है। लेकीन मानवीय सन्दर्भ में यह धारणा विरोधी दिखाई देती है। मानवीय सन्दर्भ में मादा के सम्पर्क से नर नही सुखता बल्कि नर के सम्पर्क से मादा सुख जाती है। नाटक अरविंद जो प्रमुख पुरूष पात्र नर कैक्टस का प्रतिक है। जो मिनाक्षी और सुजाता मादा कैक्टस के प्रतिक है। अरविंद इन दोनो के सम्पर्क मे आता है। दोनो का उपभोग लेता है परन्तु नही सुखता बल्कि स्वयं उन दोनो को सूखा देता है। वह पहले पत्नी के रूप में सुजाता का उपभोग लेता है और बाद मे उसे त्याग कर उसका जीवन दुःखी शुष्क एवं निरस बना देता है। बाद में वह मिनाक्षी को प्रेयसी के रूप मे उपयोग लेता है। लेकीन उसके साथ विवाह नही करता और इस कारण वह भी सुखी नही हो पाती अन्दर घुट–घुटकर कुण्ठाग्रस्त होकर जीती है। इस प्रकार दोनो नारीयॉ उसके साथ दुःखी बन जाती है।

निष्कर्ष– डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल जी के नाटको मे स्वातंत्र्योत्तर बदलती हुई सामाजिक स्थितियों का चित्रण देखने को मिलता है, सामाजिक विषमता, पुॅजीपतियों और भ्रष्ट नेताओं द्वारा हो रही सामान्य आदमी की लूट, बढता हुआ भ्रष्टाचार इन समस्याओं को अपने नाटकों के द्वारा जनता के सामने लाने का प्रयास किया है। जनता को अपने अधिकारो के प्रति जागृत करने का प्रयास भी किया है, नारीयों पर होने वाले अन्याय, अत्याचार को भी अपने नाटकों के द्वारा चित्रीत किया है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में उपजी चरित्रहीनता, भ्रष्टाचार एवं नूतन अंधधर्मिता पर तीखा प्रहार किया है। बदलते जीवन मूल्यों का चीत्रण किया है। जिसके पास संपत्ती ज्यादा है, वह जनसामान्य जनता का शोषण कर रहे है। ऐसी सर्व सामान्य जनता को नाटककार अपने अधिकारो के प्रति जागृत करना चाहता है। नाटककार ने अवतारवाद के विरोध में भी अपने नाटक के पात्रों के माध्यम से आवाज उठाई है। स्त्री–पुरूष सम्बन्धों–मे उत्पन्न होनेवाली समस्याओं को भी नाटक में चित्रीत किया है।

संदर्भ ग्रंथ –

1) हिंदी मराठी नाटक और एब्सर्ड – डॉ.सरजूप्रसाद मिश्र
2) हिंदी नाटक और रंगमंच – डॉ. धीरेंद्र शुक्ल
3) हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. माधव सोनटक्के
4) हिंदी नाटक विमर्श – डॉ. देविदास इंगळे
5) आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. रणसुभे